Soft Power
Revista euro-americana de teoria e historia de la

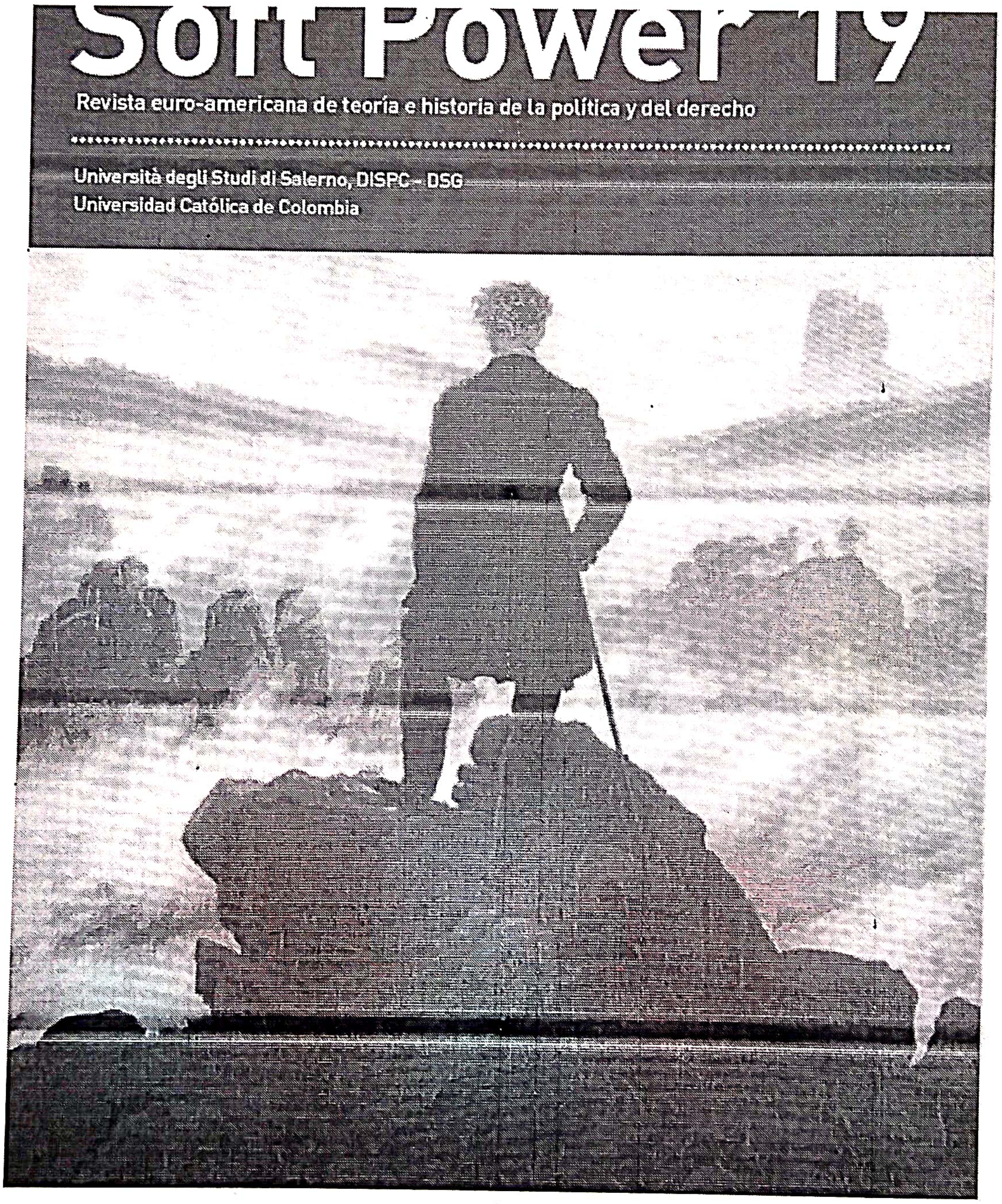

Habitability in the new climatic regime

Edited by: Marco Bontempi, Dimitri D'Andrea, Andrea Ghelfi

Issue 19 (10,1) – January-June 2023

Soft Power
Revista euro-americana de teoría e historia de la política y del derecho

Vol. 10(1). Enero-Julio 2023
ISSN (online): 2539/2239 ISSN (print): 2389-8232
http://dx.doi.org/10.14718/SoftPower.2023.10.1.10

RE-EXAMINING THE CONCEPT OF SOFT POWER AND INITIATING A DEBATE ON HOW TO DEFINE THE CONCEPT FROM THE NEGATIVE AND POSITIVE CONNOTATIONS*

Amit. K. Gupta
Sikkim University, India

REEXAMINAR EL CONCEPTO DE SOFT POWER E COMENZAR UN DEBATE SOBRE LA DEFINICIÓN DEL CONCEPTO DESDE LO NEGATIVO Y CONNOTACIONES POSITIVAS

* Reception date: 17th February 2023; acceptance date: 28th March 2023. The essay is the issue of a research carried out within the Department of Political Sciences, Sikkim University, India.

ISSN 2277 - 7083

आधुनिक साहित्य

Aadhunik Sahitya

साहित्य, संस्कृति एवं आधुनिक सोच की त्रैमासिकी

UGC Approved CARE Listed Journal
वर्ष/Year-12 अंक/Vol.-46 द्विभाषी/Bilingual
अप्रैल - जून / April – June 2023

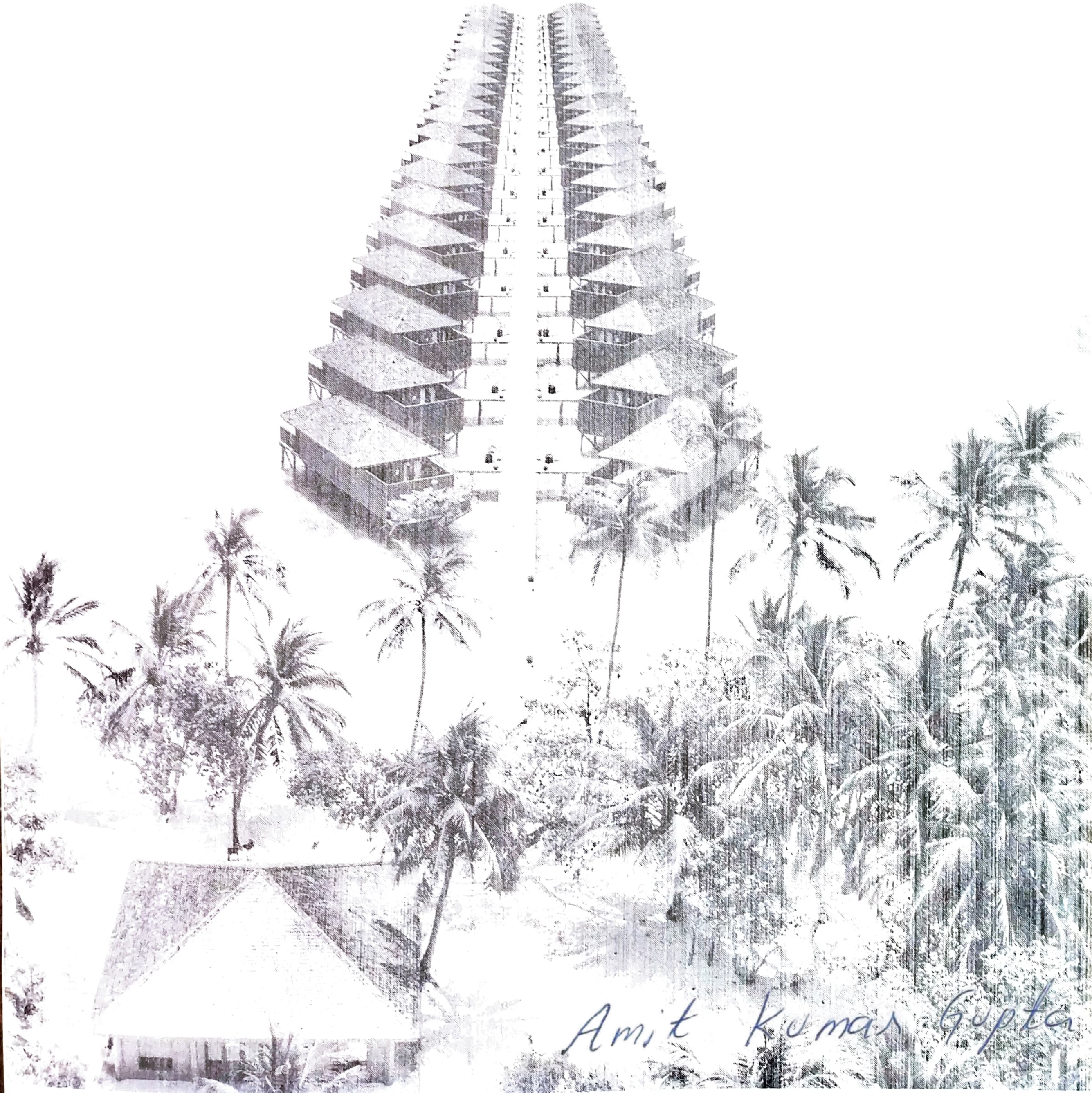

Amit Kumar Gupta

- आचार्य (डॉ.) एस. हुसैन / **भाषा का प्रश्न एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति** / 150
- डॉ. माया शर्मा / **वैचारिक क्रांति में भाषा का योगदान** / 156
- डॉ. अशोक कुमार / **भाषा का प्रश्न और पूर्वोत्तर की हिंदी** / 162
- डॉ. विभाषा मिश्र / **भाषा का प्रश्न और राष्ट्रीय शिक्षा नीति** / 167
- सीमा देवी / **वर्तमान परिदृश्य में हिंदी भाषा की स्वीकार्यता एवं प्रासंगिकता** / 169
- नायराह कुरैशी / **भाषा का प्रश्न और दक्षिण का हिंदी साहित्य** / 174
- डॉ. शीलम भारती / **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में** भाषा नीति का समीक्षात्मक अध्ययन / 177
- डॉ. पूजा जग्गी / **बुराड़ी कांड में भाषा की भूमिका** / 183
- प्रीति पाण्डेय / **भाषा के प्रश्न और काशीनाथ सिंह** / 189
- जगबीर सिंह / **भाषा का प्रश्न और प्रवासी साहित्य** / 197
- डॉ. मलखान सिंह / **तुलसी का कबित्त विवेक** / 204
- कित्तीपोंग बुनकर्ड / **समकालीन कविताओं में रामायण का प्रभाव : रावण के पात्र के विशेष संदर्भ में** / 212
- प्रो. सुचिता त्रिपाठी / **काशी का साहित्यिक योगदान** / 217
- नीलम राठी / **रेडियो प्रसारण में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अन्य प्रायोजित कार्यक्रमों की जनहितकारी भूमिका** / 224
- डॉ. अमित कुमार गुप्ता एवं डॉ. अपर्णा / **सॉफ्ट पावर : भारतीय विदेश नीति की अहम् रणनीति** / 233
- डॉ. सत्यप्रकाश सिंह / **स्वाधीनता आंदोलन और क्रांतिकारियों का जीवन तथा साहित्य** / 247
- सरिता कुमारी / **ज्योतिबा फुले का शिक्षा में योगदान : एक सामाजिक विश्लेषण** / 254

ENGLISH SECTION

- Swati Dwivedi / **National Education Policy (NEP) 2020: Promotion of Indian Languages, Multilingual Education, and the Three Language Formula** / 1
- Dr. Harjinder Kaur / **Role of Information and Communication Technology (ICT) in the Development of Hindi in the 21st Century** / 8
- Lhundup Dorjee / **Analysis on the Different Features of Modern Tibetan Literature** / 15

Amit Kumar Gupta

Amit Kumar Gupta

सॉफ्ट पावर : भारतीय विदेश नीति की अहम् रणनीति

–डॉ. अमित कुमार गुप्ता
–डॉ. अपर्णा

महात्मा गांधी ने बताया था–"मेरा मानना है कि जिस सभ्यता में भारत का विकास हुआ है, उसे दुनिया के सामने उपहास के रूप में नहीं आने देना है। हमारे पूर्वजों द्वारा बोए गए सांस्कृतिक बीजों की बराबरी कोई नहीं कर सकता। रोम चला गया गया, ग्रीस ने वही भाग्य साझा किया, फिरौन की शक्ति टूट गई, जापान पाश्चात्य हो गया है, चीन का कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन भारत अभी भी और एक मजबूत नींव के साथ किसी ना किसी तरह आगे भी रहेगा।

भारत अन्य राष्ट्रों के तरह विश्व परिदृश्य पर अपनाप्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्षरत है। भारत के राजनीतिक विचारकों में ये बहस की बात है कि, क्या भारत महाशक्ति बनेगा तथा क्या वह कभी अपना वैश्विक वर्चस्व को स्थापित कर पाएगा? अपने इसी वैभव की प्राप्ति के लिए। भारत ने अपनी सॉफ्ट पावर (मृदु शक्ति) क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया है। इस लेख में हम मृदु शक्ति के रूप में भारत की क्षमताओं को तलाशने का प्रयास करेंगे। साथ ही भारत सरकार अन्य राष्ट्रों के समक्ष अपनी सकारात्मक छवि को बढ़ाने के लिए मृदु शक्ति का उपयोगकैसे कर रही है, इस पर भी चर्चा करेंगे।

बीज शब्द– मृदु शक्ति, सार्वजनिक कूटनीति, भारतीय संस्कृति, लोकतंत्र, भारतीय प्रवासी।

मूल लेख : सतत प्रतिस्पर्धा अंतराष्ट्रीय राजनीति की विशेषता रही है, जिसमे बड़े राष्ट्र हमेशा से छोटे राष्ट्रों को अपने दबाव में रखना चाहते हैं । विश्व राजनीति का इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्र निरंतर अपनी शक्ति बढ़ाने तथा राष्ट्रहित को साधने हेतु कार्यरत रहते हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक दूसरे को पीछे छोड़ने की जद्दोजहद में शामिल राष्ट्रों में भारत कोई अपवाद नहीं है, वैश्विक पटल पर भारत भी अलग–अलग राष्ट्रों से अलग–अलग मुद्दों के बहस में अपने आप को स्थापित किए हुए है। भारतीय खेमे में ये एक बहस का मुद्दा है कि क्या भारत महाशक्ति बनेगा? तथा क्या वह वैश्विक स्तर पर वर्चस्व स्थापित कर पाएगा? इस बात को बार बार बहस का मुद्दा बनाने वाले को भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में क्रय शक्ति की क्षमता (PPP) को देखना चाहिए, जिसमें भारत तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था है। यही नहीदुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारतीय अर्थव्यवस्था है। इसके पास अपने शस्त्रागार में परमाणु हथियार रखने के अलावा दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सक्रिय सेना व इन सबसे ऊपर इसकी आणविक क्षमता (World atlas, 2018) है। वैश्विक जनसंख्या का 17.5 प्रतिशत से अधिकभाग भारत का है। (India Today, 2011), तथा इसके

Amit Kumar Gupta

स्थापना वर्ष : 1956

पंजी. सं. : 25388/74

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

'संकल्य' (हिन्दी त्रैमासिक) ISSN 2277 - 9264

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी, न्यू नागोल, हैदराबाद - 500 035

दूरभाष : 040 - 2405 4306

प्रो. टी. मोहन सिंह
अध्यक्ष

प्रो. ए. रामुलु
उपाध्यक्ष

डॉ. गोरख नाथ तिवारी
सचिव एवं कोषाध्यक्ष

श्रीमती ज्योति नारायण
सहसचिव - I

श्रीमती मीरा
सहसचिव - II

डॉ. आशा चावला
कार्यकारिणी सदस्य

प्रो. शुभदा वांजपे
कार्यकारिणी सदस्य

श्री जी. रामदास
कार्यकारिणी सदस्य

श्रीमती रेखा तिवारी
कार्यकारिणी सदस्य

शोध-पत्र स्वीकृति संबंधी प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि डॉ. अमित कुमार गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय का **'21वीं सदी में प्रवासी भारतीय और उनके साहित्य'** विषय पर केंद्रित शोध पत्र 'संकल्य पत्रिका' (ISSN No. 2277-9264) के जनवरी-मार्च एवं अप्रैल-जून, २०२३ संयुक्तांक में प्रकाशन हेतु स्वीकृत हुआ है। यह अंक प्रकाशनधीन है, प्रकाशित लेख के रूप में इसकी गणना की जा सकती है। यह पत्रिका हिन्दी अकादमी, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित होती है। वर्तमान में यह पत्रिका UGC केयर लिस्ट में शामिल है।

Tiwari
10.01.2023

(डॉ. गोरखनाथ तिवारी)

प्रकाशक/सचिव हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संकल्य/ISSN 2277-9264

21वीं सदी में भारतीय प्रवासी और उनके साहित्य

☆ अमित कुमार गुप्ता
☆☆ रजनी बाला

परिचय

भारतीय डायस्पोरा पर सूरज कभी अस्त नहीं होता'' (गुप्ता, 2013)। यह एक तथ्य है कि प्रवासी भारतीय, विश्व में सबसे बड़ा, समूह है इसके लगभग 25 मिलियन होने का अनुमान है, भारतीय प्रवासी विश्व के समस्त देशों में फैले हुए हैं। इस प्रवासी समूह की विशेषता केवल इसकी बड़ी संख्या नहीं है, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात उनकी गुणवत्ता है, जिसे उनके मेजबान देश स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं। वर्तमान में, प्रवासी भारतीय अपने अच्छे आचरण और गुणों से दुनिया का दिल जीत रहे हैं। प्रवासी भारतीय अपने कौशल, समर्पण और कड़ी मेहनत के माध्यम से अपने पसंदीदा पेशे में सफल हुए हैं, चाहे वह व्यवसाय किसी कुशलता से संबंधित होया नही। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन्होंने अपने मूल देश के साथ अपने भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंधों को भी बनाए रखा है और उन सम्बन्धो का लगातार घ्यान रखा किया है। अपनी मातृभूमि, परंपराओं, धर्म और भाषा के प्रति इस लगाव ने उन्हें ऐसे साहित्य का निर्माण करने में सक्षम बनाया है, जिन्हें डायस्पोरिक साहित्य कहा जाता है। पिछले बीस वर्षों से, भारतीय डायस्पोरा के लेखक अपने कार्यों से प्रमुख केंद्र बन गए हैं। इस प्रकार भारतीय डायस्पोरा के लेखको ने इस तरह के साहित्य के माध्यम से अपने निवास के देशों के साथ बेहतर संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक 'सेतु' के रूप में कार्य किया है और इसके अतिरिक्त, भारतीय डायस्पोरा ने भारत को दुनिया के सामने पेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार यह लेख विश्लेषण करने का प्रयास करता है। डायस्पोरिक साहित्य की प्रकृति के प्रभाव ने विदेशों में भारत की सौम्य छवि को बढ़ावा दिया है।

प्रवासी कौन है?

सामान्य शब्दों में डायस्पोरा की अवधारणा का उपयोग जनसंख्या के एक वर्ग का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो या तो स्वेच्छा से या अनैच्छिक रूप से अपनी मातृभूमि से कई अन्य देशों में फैल गए हैं, ये अपने इतिहास और फैलाव के परिणामों के आधार पर अपना समुदायों और पहचान बनाते चले गए हैं (पियरे), रा)। डायस्पोरा शब्द का अर्थ और परिभाषा विभिन्न बौद्धिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक एजेंडे को समायोजित करने के लिए समय के साथ विस्तर्त और विस्तारित हुई है। डायस्पोरा की पहले की चर्चाएँ और परिभाषाएँ मुख्य रूप से यहूदी डायस्पोरा मामले से संबंधित थीं, शब्दकोशों ने पहले यहूदियों के मामले के संदर्भ में इस शब्द को परिभाषित किया था। धीरे–धीरे, अर्मेनियाई और ग्रीक मामलों को भी संदर्भ में शामिल करने के साथ ही इस शब्द का दायरा चौड़ा होने लगा (गेब्रियल, 1986)। डायस्पोरा की चर्चा

फैलते ही, इसमें अफ्रीकी डायस्पोरा, फिलीस्तीनी डायस्पोरा और धीरे–धीरे दुसरे मामले भी इस शब्द में शामिल हो गया, जो सभी बिखरी हुई आबादी को संदर्भित करता है, जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने मूल देश के साथ अपने सांस्कृतिक संबंधों को बनाए रखा है। डायस्पोरा शब्द के उपरोक्त विकासवादी पथ को ध्यान में रखते हुए, रॉबिन कोहेन, लिसा एंटेबी–येमिनी और अन्य ने डायस्पोरा के कुछ आदर्श प्रकारों की पहचान की है जो अकादमिक प्रवचनों में बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

पीड़ित डायस्पोरारू यहूदियों, अफ्रीकियों, आर्मीनियाई, आयरिश और फिलीस्तीनियों को पीड़ित डायस्पोरा के रूप में संदर्भित किया जाता है, क्योंकि वे ऐसे लोगों के समूह हैं जिन्हें अपने घरेलू देशों से भागने के लिए मजबूर किया गया है, आम तौर पर इसका कारण कुछ विनाशकारी घटनाओं जैसे, विजय, सामूहिक उत्पीड़न, दासता, नरसंहार, वगैरह के परिणामस्वरूप मूल स्थान से विस्थापन है व्यापारिक प्रवासी रू चीनी, लेबनानी, जापानी और पेशेवर भारतीयों को व्यापारिक प्रवासी कहा जाता है, क्योंकि वे लोगों के समूह हैं, विशेष रूप से व्यवसायी जो मेजबान समाज में व्यापार करने के लिए विदेश गए थे।

प्रवासी श्रमिक रू प्रवासी श्रमिक को सर्वहारा डायस्पोरा के रूप में भी जाना जाता है, जो मुख्य रूप से उन गिरमिटिया मजदूरों और श्रमिक प्रवासियों थे जो काम करने के लिए औपनिवेशिक मेजबानों के पास गए और परिणामस्वरूप उन देशों में बस गए। इसमें प्राथमिक उदाहरण भारतीय, चीनी और उत्तरी अफ्रीकी आते है।

इंपीरियल डायस्पोरारू इंपीरियल डायस्पोरा उन प्रवासियों को संदर्भित करता है जो किसी अन्य देश में गए थे जो उनके देश द्वारा उपनिवेशित किया गया था। शासक शक्ति के साथ अपने जातीय संबंधों के कारण उन्हें उच्च दर्जा प्राप्त था और स्थानीय लोगों के रीति–रिवाजों और परंपराओं को अपने द्वारा प्रभावित करने में सफल रहे। यहाँ प्राथमिक उदाहरण ब्रिटिश, स्पेनिश, फ्रेंच, पुर्तगाली और रूसी हैं।

सांस्कृतिक डायस्पोरारू यह वर्ण–संकरता और विकेंद्रीयकरण की धारणा को संदर्भित करता है, जिसका उपयोग आधुनिकतावादी लेखकों द्वारा मिश्रित संस्कृतियों के साथ एक वैश्विक गांव के विकास को दर्शाने के लिए किया जाता है। इस संबंध में कोहेन डायस्पोरा का वर्णन उन लोगों के रूप में करते हैं जो 'राष्ट्र–राज्यों और श्यात्रा करने वाली संस्कृतियों' के बीच कहीं स्थित हैं, जिसमें वे एक राष्ट्र–राज्य में भौतिक रूप से शामिल हैं, लेकिन एक सूक्ष्म या आध्यात्मिक अर्थ में राष्ट्र–राज्य के क्षेत्र से बाहर के शामिल हैं"।

भारतीय प्रवासी

भारतीय डायस्पोरा श्गैर–प्रवासीय भारतीयोंश (एनआरआई) और भारतीय मूल के व्यक्तियों (पीआईओ) से बना है, जहां एनआरआई उन भारतीय नागरिकों को संदर्भित करते हैं जो भारत में नहीं रह रहे हैं और पीआईओ भारतीय मूल के उन व्यक्तियों को संदर्भित करते हैं जिन्होंने किसी दूसरे देश की नागरिकता अधिग्रहण किया है। भारतीय डायस्पोरा में पूरे विश्व में फैले हुए उनके वंशज